Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **07.11.14** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

वास्तविक नेकी को कदापि न पाओगे जब तक कि तुम सर्वप्रिय वस्तु न ख़र्च करोगे, क्यूंकि अल्लाह के बन्दों के साथ सहानुभूति तथा व्यवहार का एक बड़ा भाग माल के ख़र्च करने की आवश्यकता बतलाता है तथा समस्त सृष्टि एंव अल्लाह की मख़लूक़ की सहानुभूति एक ऐसी चीज़ है जो ईमान का दूसरा अंश है जिसके बिना ईमान पूर्ण तथा व्यापक नहीं होता।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ न निम्नलिखित आयत तिलावत फ़रमाई- لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ ۬ؕ وَمَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ شَیۡءٍ فَاِنَّ اللّٰہَ بِہٖ عَلِیۡمٌ ﴿۹۳﴾

तुम नेकी को कदापि न पा सकोगे यहां तक कि तुम उन चीज़ों में से ख़र्च करो जिनसे तुम मुहब्बत करते हो और तुम जो कुछ भी ख़र्च करते हो तो यक़ीनन अल्लाह उसको ख़ूब जानता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं कि दुनिया में इंसान माल से बहुत अधिक मुहब्बत करता है इसी लिए स्वप्न फल की विद्या में लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति देखे कि उसने जिगर निकालकर किसी को दिया है, सपने में यह देखे, तो इसका अर्थ माल है। यही कारण है कि वास्तविक तुत्तक़ी तथा ईमान की प्राप्ति के लिए फ़रमाया- لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ ۬ؕ तुहिब्बून। अर्थात- वास्तविक नेकी को हरगिज़ न पाओगे जब तक कि तुम अज़ीज़ तरीन चीज़ को न ख़र्च करोगे क्यूंकि अल्लाह के बन्दों के साथ सहानुभूति तथा व्यवहार का एक बड़ा भाग माल के ख़र्च करने की आवश्यकता बतलाता है तथा समस्त सृष्टि एंव अल्लाह की मख़लूक़ की सहानुभूति एक ऐसी चीज़ है जो ईमान का दूसरा अंश है जिसके बिना ईमान पूर्ण तथा व्यापक नहीं होता। जब तक इंसान बलिदान न कर दूसरे को लाभ कयोंकर पहुंच सकता है। दूसरे की भलाई तथा सहानुभूति के लिए बलिदान आवश्यक है और इस आयत लनतना लुलबिर्रा हत्ता तुनफ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बून। में इसी बलिदान की शिक्षा तथा प्रेरणा दी गई है।

अतः माल का अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करना भी इंसान की नेकी और तक़वा पर चलने का मापदंड है। अबूबकर रज़ी0 के जीवन में अल्लाह के लिए समर्पण की कसौटी तथा मापदंड था जो रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक आवश्यकता बयान की और वे घर की समस्त पूंजी लेकर उपस्थित हो गए। अल्लाह तआला का हम पर उपकार है कि हमें उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई जिन्होंने हमारे विश्वास तथा कामों का सुधार अल्लाह तआला के निर्देशानुसार किया वहीं आध्यात्मिक विकास तथा शुद्धिकरण के भी क़ुरआन की शिक्षानुसार मार्ग सिखाए। अल्लाह के अधिकारों की ओर भी ध्यान दिलाया तथा उसके बन्दों के अधिकारों की ओर भी ध्यान दिलाया। जान, माल, समय तथा संतान को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए बलिदान करने की रूह भी पैदा फ़रमाई। अपनी जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति से यह आशा रखी कि वह अपनी हालतों को सम्पूर्ण रूप से ख़ुदा तआला के निर्देशानुसार बनाएं तभी वे वास्तविक अहमदी कहला सकते हैं। अतः हमें कोशिश करनी चाहिए कि अपने जीवन को आपकी आशा एंव अभिलाषा के अनुसार ढ़ालने का प्रयास करें। यह अवतरण जो मैं ने पढ़ा है यह इस आयत की व्याख्या में है जिसकी मैं ने पहले तिलावत की थी, जैसा कि मैं ने बताया, इसमें अल्लाह तआला हमें हमारी रूहानी उन्नति के लिए जो एक मोमिन के कर्तव्य हैं, उनकी ओर ध्यान दिला रहा है, अर्थात उनमें से एक दायित्व की ओर अर्थात माल की क़ुरबानी। यद्यपि इसमें, यह व्यापक भावार्थ है परन्तु इस समय माल के बलिदान से सम्बंधित, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि पूंजी का बलिदान भी एक बहुत बड़ा साधन है अल्लाह और उसके बन्दों के हक़ अदा करने का। तो इस प्रकार जो माल की क़ुर्बानी का वर्णन है इस आयत में, उसकी ओर इस आयत के सम्बंध में मैं बयान करूंगा। बन्दों के हक़ की अदायगी के लिए भी तथा दीन के प्रचार के काम के सम्बंध में भी माल की क़र्बानी की आवश्यकता है। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अवतरण का निचोड़ है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में ये काम अपनी चरम सीमा को पहुंचने थे और आज हम अहमदी उन भागय शाली लोगों में शामिल हैं जो इस काम को पूरा करने में भागीदार हैं ताकि हम अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले बनें। आज दुनिया माल की मुहब्बत में पता नहीं क्या कुछ कर रही है। परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा दीक्षा का प्रभाव है कि अहमदियों की बहुत बड़ी संख्या, अधिकांश अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के लाए हुए दीन के प्रकाशन के लिए अपने प्रिय माल में से ख़र्च करते हैं और यदि कभी माल ख़र्च करने तौफ़ीक़ किसी कारण से कम हो जाए तो व्याकुल हो जाते हैं, रोते हैं। तो यह है आत्मा जमाअत के लोगों में। माल की क़ुरबानी का क्या महत्व है? क्या क्या काम हैं?

जब लोगों पर विदित हो जाए तो फिर हर समय वे क़ुरबानी के लिए तैय्यार होते हैं। अतः यदि कमी होती है तो निज़ाम की कमी होती है। लोगों के ईमान में कोई कमज़ोरी नहीं है अल्लाह के फ़ज़्ल से।

मैं इस समय कुछ घटनाएं बयान करूंगा जो इस ज़माने में भी किस प्रकार लोगों के दिलों में क़ुरबानी को रूह पैदा करने की प्रणा उत्पन्न करते हैं। बेनिन के अमीर साहब लिखते हैं कि पोरतोनोवो के एक विख्यात अहमदी हैं, मशहूदी साहब। उन्होंने 1000 पाउंड से अधिक की क़ुरबानी की। अब अफ़रीक़ा के देशों में इतनी बड़ी क़ुरबानी बहुत बड़ी चीज़ है। जब उनको मुबल्लिग़ ने कहा कि इतनी आप कर रहे हैं, वक़्फ़े जदीद का भी चन्दा है और दूसरे चन्दे भी हैं तो उन्होंने कहा कि निःसन्देह होंगे लेकिन इसमें से मैं कम नहीं करूंगा अल्लाह तआला उनके लिए अन्य साधन उपलब्ध करा देगा। तो यह वह रूह है जो उन लोगों में पैदा हो रही है। फिर बेनिन से हमारे मुबल्लिग़ लिखते हैं- सावे रीजन के एक नौमुबाए जमाअत पैल में एक तर्बियती इजलास आयोजित किया गया तो तहरीके जदीद की ऐतिहासिक पृष्ट भूमि बयान की गई तथा माल की क़ुरबानी के सम्बंध में ध्यान दिलाया। गोष्ठि के अन्त में दोस्तों ने अपना अपना चन्दा पेश किया। एक दोस्त ने पूछा कि मेरे पास पैसा तो नहीं परन्तु चन्दा देने की इच्छा है। इस पर वहां के स्थानीय मुबल्लिग़ ने उसका मार्ग दर्शन किया कि सामर्थ्य अनुसार जो कुछ भी है वह पेश करें। इस पर वह दोस्त गए, बड़े ग़रीब थे, घर से मुर्ग़ी के दो अन्डे लेकर आए कि इस समय मेरे पास ये हैं तो उनको बताया गया, जमाअत को भी, कि यह उनके सामर्थ्य के अनुसार बहुत बड़ी क़ुरबानी है और ख़ुदा तआला की दृष्टि में कोई क़ुरबानी छोटी नहीं, बस नीयत नेक होनी चाहिए। फिर माली की एक रिपोर्ट है- एक पुराने अहमदी अबूबकर जारा साहब ने किसी कारण से चन्दा देना छोड़ दिया और धीरे धीरे जमाअत के आयोजनों में भी आना छोड़ दिया। इस पर उन्हें काफ़ी समझाया परन्तु कोई प्रभाव न पड़ता था। कुछ समय पश्चात वे एक दिन मिशन आए तथा अपना चन्दा अदा किया और बताया कि आज रात उन्हाने एक सपना देखा है कि वे बहुत गहरे पानी में डूब रहे हैं और काई उनकी सहायता के लिए नहीं आ रहा। इतने में वे एक नाव देखते हैं जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सवार हैं। हुज़ूर ने उनका हाथ पकड़ा और नाव में अपने साथ बिठा लिया और फ़रमाया कि आगे से कभी भी चन्दा देने में सुस्ती न करना। इस सपने के बाद उन्होंने जमाअत से दृढ़ संकल्प किया कि भविष्य में वे कभी भी चन्दा देने में सुस्ती न करेंगे और न ही वे जमाअत के कामों में सुस्ती करेंगे।

अतः जहां यह चन्दे के महत्व का प्रमाण है वहीं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का प्रमाण है कि दूर के एक देश में तथा उस देश के भी एक दूर के इलाक़े में एक व्यक्ति अहमदिय्यत क़बूल करता है फिर पीछे हट जाता है और उसका मार्ग दर्शन फिर सपने के द्वारा होता है। दारुस्सलाम तंज़ानिया के एक अहमदी दोस्त ईसा साहब बयान करते हैं, उन्होंने नव्वे के दशक में अहमदिय्यत क़बूल की थी, इससे पहले वे ईसाई धर्म से सम्बंध रखते थे। अहमदिय्यत क़बूल करने के बाद ईमान काफ़ी उन्नति की। अब माशाअल्लाह मूसी हैं तथा माल की क़ुरबानी करने वाले हैं। सदैव अपना तथा अपने परिवार का चन्दा वादे से अधिक अदा करते हैं। जमाअत की शिक्षाओं के अनुसार काम करने में पुराने अहमदियों से बहुत आगे हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दारुस्सलाम तंज़ानिया के रीजनल अध्यक्ष हैं। कहते हैं कि जब से मैं ने अल्लाह तआला की राह में क़ुरबानी आरम्भ की है, अल्लाह तआला के अत्यधिक फ़ज़्ल अपने ऊपर अवतरित होते दखे हैं। इसी प्रकार अलाडा रीजन के मुबल्लिग़ साहब कहते हैं- एक बार सोयो जमाअत के दौरे पर गए तो एक सात साल की बच्ची, अब देखें बच्चों के दिल में भी किस प्रकार अल्लाह तआला डालता है, राशदा टमाटर और मिर्चें तथा मालटे लेकर आई और कहा कि यह सब तहरीके जदीद के चन्दे के लिए लाई है। वहां के सदर साहब ने बताया कि वह हर माह चन्दा देती है और यदि उसकी माँ चन्दे के पैसे न दे तो वह रोती है।

नाइजेरिया की जमाअत के सदर साहब कहते हैं, ओकीने जमाअत के- विनीत कुछ समय तक आर्थिक कठिनाइयों का शिकार रहा। इसके कारण काफ़ी कठिनाई हुई। फिर एक दिन मेरे मन में आया कि विनीत ने तीन महीने से चन्दा अदा नहीं किया। सम्भव है विनीत इसी कारण आर्थिक कठिनाई में लिप्त हो। इस पर मैं ने तीन महीने बाद 4000 नायरा चन्दा अदा किया। ख़ुदा तआला का करना ऐसा हुआ कि इसी महीने विनीत ने एक टुकड़ा ज़मीन का बेचा जिसपर मेरे मौलाए करीम ने आठ लाख नायरा का लाभ प्रदान किया। उस समय मेरे ईमान को जहां और अधिक दृढ़ता प्रदान हुई वहीं यह बात भी समझ में आई कि ख़ुदा तआला अपने वादों का सच्चा है। यदि उसकी राह में क़ुरबानी करोगे तो वह अवश्य कई गुना बढ़ाकर तुम्हें वापस लौटाएगा। अब उन्होंने मस्जिद तथा मिशन हाउस के लिए एक बहुत बड़ा प्लाट भी नगरीय क्षेत्र में लेकर दिया है। तंज़ानिया से एक अहमदी मारवंडा साहब लिखते हैं कि मेरी शिक्षा मैट्रिक है एक लम्बे समय से बेरोज़गार था। मुझे एक गैस कम्पनी में नौकरी मिल गई। 56 हज़ार शिलिंग वेतन नियुक्त हुआ। मैं ने उसी समय ख़ुदा से प्रतिज्ञा की कि मैं अपने वेतन पर नियमानुसार चन्दा अदा करूंगा चाहे मेरे सामने कैसी ही समस्याए आएं, मैं चन्दे में सुस्ती नहीं करूंगा। इस प्रकार उस ख़ादिम ने अपने प्रतिज्ञा को निभाया। कहते हैं कि मैं आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इसी माल की क़ुरबानी के कारण इस गैस कम्पनी में सीनियर फ़ील्ड गैस आप्रटर के ओहदे पर नियुक्त हूँ और मुझे डेढ़ मिलयन शिलिंग वेतन मिल रहा है। मेरी शिक्षा केवल दसवीं कक्षा पास है कम्पनी के नियमों क अनुसार मैं इस ओहदे के योगय भी नहीं हूँ परन्तु केवल ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के नियमानुसार माल की क़ुरबानी की ये बरकतें हैं कि मैं इस ओहदे पर नियुक्त हूँ और आज भी शरह के अनुसार चन्दा अदा करता हूँ। इस प्रकार ये लोग श्रद्धा एंव निष्ठा में बढ़ रहे हैं और **अनफ़िक़ू ख़ैरल्लि अनफ़ुसिकुम,** अर्थात अपने उसकी राह में ख़र्च करते रहो तो यह तुम्हारी जानों के बेहतर है, इस विषय को समझने वाले हैं। इस भेद को समझने वाले हैं ये लोग और अल्लाह फिर अपनी कृपा भी करता है। शहाबुद्दीन साहब एक इंडिया के इंस्पैक्टर तहरीके जदीद लिखते हैं कि एक साहब जो जड़चर्ला के प्रथम पंक्ति के मुजाहिद हैं, उनका कारोबार प्रभावित हो गया, रियल स्टेट का कारोबार था। कई महीनों से बड़े

दुखी थे और फ़ोन करके वे चन्दों की अदायगी का निवेदन भी करते रहे। मुझे भी उन्होंने लिखा तो एक रात को उनका फ़ोन आया कि मुझे अभी मिलना है। तो उन्होंने उनको कहा कि आप अल्लाह तआला पर भरोसा रखें, दो रकात नफ़ल पढ़ें और सो जाएं। कहते हैं- थोड़ी देर के बाद फिर फ़ोन आया और कहने लगे कि मेरे लिए आप थोड़ी देर जागते रहें, मैं आपसे मिलने आ रहा हूँ। तो जब श्रीमान आए तो एक बड़ी रक़म उनके हाथ में थी। कहने लगे, यह किसी ने, जब मैं यह दुआ कर रहा था तो एक ऐसा व्यक्ति जिसका बड़ा कारोबार था उसका फ़ोन आया जिसके ज़िम्मे मेरी बहुत बड़ी रक़म शेष थी और जिसके मिलने की आशा भी नहीं थी तो उसने मुझे फ़ोन किया कि तुरन्त आकर अपनी रक़म ले जाओ। तो यह कहते हैं कि क्यूंकि मेरी नीयत थी चन्दे देने की, इस लिए अल्लाह तआला ने तुरन्त यह प्रबन्ध कर दिया।

इसी प्रकार बशीरुद्दीन साहब, नायब वकीलुल माल हैं क़ादियान के। यह कहते हैं कि जमाअत के एक निष्ठ दोस्त ने ढ़ाई गुना बढ़ोतरी के साथ अपना वादा लिखवाया और अपने आफ़िस के लिए रवाना हो गए। जब ये वहां गए, कुछ ही दर के बाद श्रीमान ने सैक्रेट्री साहब तहरीके जदीद को फ़ोन किया और बताया कि वह वादा लिखवाकर मस्जिद से बाहर निकलते ही मुझे अपने कारोबार में अधिक लाभ होने की सूचना मिली है कि मैं समझता हूँ कि यह अधिक लाभ निःसन्देह अल्लाह तआला की विशेष कृपा और तहरीके जदीद की बरकत से हुआ है अतः आप मेरा वादा दो गुना कर दें। ढ़ाई गुना बढ़ोतरी वे पहले ही कर चुके थे अब उसको भी दो गुना कर दिया और अल्लाह के फ़ज़्ल से पूरी अदायगी भी कर दी। इसी प्रकार केरला इंडिया के मुरब्बी साहब लिखते हैं कि एक जमाअत के बलिदान करने वाले एक श्रद्धालु दोस्त ने पिछले साल अपना तहरीके जदीद का चन्दा दो गुनी बढ़ोतरी के साथ अदा किया था और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस वर्ष भी बड़ी बढोतरी के साथ अदायगी की है। श्रीमान ने बताया कि उन्हेंने सात साल पहले तीस हज़ार रुपए की पूंजी और केवल तीन मज़दूरों के साथ व्यवसाय आरम्भ किया था जबकि इस समय अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मेरी इंडिया, दुबई तथा इंडोनेशिया में कच्चे लकड़ी के फ़र्नीचर की आठ फ़ैक्ट्रियां हैं जिनमें पाँच सौ से अधिक कारीगर काम करते हैं। ये उन्नति जो आप देख रहे हैं ये केवल चन्दों की बा-शरह अदायगी के कारण है। श्रीमान जी कहते हैं कि मैं जब भी चन्दा अदा करता हूँ ख़ुदा तआला मुझे शाम तक उससे कहीं अधिक वापस कर देता है और मैं ने कभी माल की तंगी, सवाल ही नहीं कि अनुभव की हो। अमीर साहब लाहौर लिखते ह- इसी प्रकार हमारी महिलाएं भी कैसी क़ुरबानियां देती हैं कि एक महिला ने अपने कानों के सोने के बने हुए बुन्दे तहरीके जदीद में पेश किए। अल्लाह तआला करे इनके माल में भी बरकत पड़े और इनकी क़ुरबानी क़बूल हो। नैशनल सैक्रेट्रो तहरीके जदीद जर्मनी कहते हैं कि, एक ऋणी दोस्त की बात लिखी है उन्होंने, कि उन्होंने तहरीके जदीद में विशेष वादा कर दिया और अल्लाह तआला ने इतनी आमदनी बढ़ा दी कि ऋण भी अदा हो गया और उन्हें नया घर ख़रीदने की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाई जो उनके लिए प्रत्यक्षतः असम्भव था।

स्वीज़र लैंड से मुबल्लिग़ इंचार्ज लिखत हैं एक हमारे बैतम रैडज़ हिपी साहब मक़दूनीन से सम्बंधित स्विस हैं। पिछले साल उन्होंने अक्तूबर में बैअत की थी। तहरीके जदीद का साल समाप्त होने में केवल पाँच दिन शेष थे और जमाअत में दाख़िल होते ही उन्होंने एक हज़ार स्विस फ्रांक की बड़ी रक़म बिना वादे के तहरीके जदीद में अदा कर दी और अगले साल का वादा भी एक हज़ार लिखवा दिया। फिर साल के बीच में जब उन्हें माल की क़ुरबानी के महत्व का पता चला तो उन्होंने अपना वादा दो गुना कर दिया और तहरीके जदीद के साथ साथ वक़्फ़े जदीद में भी दो हज़ार फ्रांक का वादा लिखवा दिया। श्रीमान जी जिस कम्पनी में काम करते हैं उस में उन्हें एक ऐसे कोर्स की आफ़र कर दी जो बहुत महंगा होता है। यह कम्पनी सामान्यतः केवल उन नौकरों को ही वह कोर्स कर वाती है जिनके पास अनुभव हो तथा जिनकी आयु 35 वर्ष से अधिक हो। वे कहते हैं मेरी आयु 23 वर्ष है और मैं ने इस कोर्स के बारे में सोचा भी न था लेकिन कम्पनी ने मुझे स्वंय यह कोर्स कर वाने की आफ़र कर दी। यक़ीनन यह माल की क़रबानी की बरकत का फल है जो अल्लाह तआला ने मुझे अता फ़रमाया है।

इस प्रकार ये जो नए आने वाले हैं, योरुप में भी इनको अल्लाह तआला इस प्रकार अपनी हस्ती का यक़ीन दिलाता है। इसी प्रकार एक मक़दूनीन स्विस अहमदी बेक्हम साहब हैं। कहते हैं, मैं जिस कम्पनी में काम करता हूँ उसका मालिक बड़ा कंजूस तथा तंग दिल इंसान है। बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के मेरे वेतन में बढ़ोतरी कर दी। मैं समझता हूँ कि केवल और केवल माल की क़रबानी का परणिाम है। यहां नसरुद्दीन साहब रीजनल अमीर लंदन के हैं। ये एक दोस्त के बारे में लिखते हैं कि एक अहमदी दोस्त ने बताया कि अल्लाह तआला से बहुत दुआ की कि तहरीके जदीद के सम्बंध मेरी सहायता फ़रमा। अल्लाह तआला की ओर से यह विचार मेरे मन में डाला गया कि दफ़तर जात हुए ट्रन पर जाने के बजाए बस द्वारा यात्रा किया करूं। इस प्रकार मुझे निःशुल्क यात्रा की सुविधा मिलेगी और पर्याप्त बचत भी हो जाएगी। इस प्रकार रोज़ाना दो पाउंड की बचत होने लगी तथा साल भर ऐसा करते हुए कुल 400 पाउंड की बचत हुई जो तहरीके जदीद के चन्दे में अदा कर दी। इस प्रकार भी लोग सोचते हैं। एक साहब के घर डकैती हुई, सारा घर का माल लूट लिया, यहां लंदन में ही। परन्तु एक हज़ार पाउंड जो उन्होंने रखा हुआ था तहरीके जदीद के चन्दे के लिए, वह सुरक्षित रहा। इसी प्रकार आस्ट्रलिया के मिशनरी इंचार्ज साहब लिखते हैं कि पिछले दिनों इज्तिमा था ख़ुद्दामुल अहमदिय्या का। वहां मैं ने तहरीके जदीद की ओर ध्यान आकर्षित किया। ख़द्दाम व अतफ़ाल को वहां वाउचर के रूप में पुरस्कार भी दिए गए तो बच्चे, अरसलान, आतिफ़ तथा कामरान, ये बच्चे वर्णन योगय हैं, तीन बच्चे। उनको 89 डालर के वाउचर इनाम में मिले। कहते हैं- तहरीक के बाद इन बच्चों ने अपनी जेब ख़र्च में से गयारह डालर की अधिक रक़म मिलाकर सौ डालर बनाकर तुरन्त तहरीके जदीद में चन्दा अदा कर दिया। तो ये कुछ घटनाएं मैं ने बहुत सी घटनाओं मे बयान की हैं और केवल पुराने अहमदी क़ुरबानी नहीं दे रहे बल्कि नौ-मुबायीन भी जैसा कि मैं ने कहा, अफ़रीक़ा में भी, योरुप में भी, बच्चे भी, महिलाएं भी

अदभुत ढंग से क़ुरबानियां दे रहे हैं। यह याद रखना चाहिए कि चन्दा-ए-आम यक़ीनन सर्वप्रथम होना चाहिए तथा हर कमाने वाले को यह देना चाहिए इसके बाद फिर सामर्थ्य अनुसार तहरीके जदीद और वक़्फ़े जदीद अथवा अन्य तहरीकों के चन्दे हैं।

अब मैं, जैसा हम जानते हैं, तहरीके जदीद का नव वर्ष नवम्बर में आरम्भ होता है। इस अवसर पर पिछले साल की रिपोर्ट तथा नए साल का ऐलान करूंगा। यह वर्ष अस्सीवाँ वर्ष था तहरीके जदीद का जो 31 अक्तूबर 2014 को समाप्त हुआ और रिपोर्टस के अनुसार इस साल में 84,17,800 पाउंड की माली क़ुरबानी जमाअत ने दी, अल-हमदुलिल्लाह। ये वसूली पिछले वर्ष की तुलना में छः लाख एक हज़ार कुछ सौ अधिक है और पाकिस्तान बावजूद अपने हालात के इस बार पहले नम्बर पर ही है। पाकिस्तान के अतिरिक्त जो दस जमाअतें हैं, बाहर की जो जमाअतें हैं, जर्मनी पहले नम्बर पर है। बर्तानिया दूसरे नम्बर पर। पिछले साल यू के का तीसरा नम्बर था, अब दूसरे नम्बर पर आ गए हैं। अमरीका तीसरे नम्बर पर, कैनेडा चौथे पर, इंडिया पाँचवें पर, आस्ट्रलिया छटे पर, इंडोनेशिया सातवें पर। आस्ट्रलिया भी एक नम्बर ऊपर आ गया और इंडोनेशिया पीछे चला गया। इसके अतिरिक्त मिडिल ईस्ट की कुछ जमाअतें हैं, दो जमाअतें। फिर स्विटज़र लैंड, घाना तथा नाइजेरिया हैं। पहली दस जमाअतों में से जो वसूली करंसी के अनुसार वसूली में बढ़ोतरी है। वह घाना नम्बर एक पे है, लगभग पचास प्रतिशत उन्होंने बढ़ौतरी की है। स्थानीय करंसी के अनुसार आस्ट्रलिया नम्बर दो पर है उन्होंने 44 प्रतिशत फिर कुछ मिडिल ईस्ट की जमाअतें हैं सत्तर प्रतिशत, स्विटज़र लैंड लगभग 15 प्रतिशत, पाकिस्तान 14 प्रतिशत, यू के 13, लगभग पौने चौदह प्रतिशत इंडोनेशिया है फिर भारत और जर्मनी बराबर हैं, कैनेडा अन्तिम नम्बर पर है। इन दस जमाअतों में प्रति व्यक्ति अदायगी के अनुसार अमरीका पहले नम्बर पर है स्विटज़र लैंड दूसरे नम्बर पर और आस्ट्रेलिया तीसरे नम्बर पे।

पिछले कुछ वर्षों से मैं, दो तीन साल से ध्यान दिला रहा हूँ कि तहरीके जदीद तथा वक़्फ़े जदीद की संख्या में वृद्धि होनी चाहिए। यह न देखें कि रक़म बढ़ती है कि नहीं, श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि होनी चाहिए तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस वर्ष ये कुल संख्या 12,11,700 हो गई है तथा पिछले चार साल में लगभग छः लाख की वृद्धि हुई है इस संख्या में जो नए शामिल हुए हैं। दफ़तर अव्वल के खाते अल्लाह के फ़ज़्ल से 5927 लोग हैं इस में, दफ़तर के रिकार्ड के अनुसार। 105 अल्लाह के फ़ज़्ल स जीवित हैं शेष वफ़ात हुए लोगों में 5822 खाते उनके उत्तराधिकारियों अथवा अन्य जमाअत के श्रद्धालुओं ने जारी किए हुए हैं। इंडिया के पहले दस प्रदेश केरला नम्बर एक, तमिल नाडु, कर्नाटक, आंधर प्रदेश, जम्मु कशमीर, उड़ीसा, बंगाल, पंजाब, देहली, लक्ष्यदीप। दस जमाअतें, पहली नम्बर एक करुलाई, नम्बर दो कालीकट, फिर हैदाराबाद फिर क़ादियान, कनानूर टाउन, पयंगाड़ी, सोलोर, कोलकाता, चैन्नई, बैंगलोर। अल्लाह तआला इन सबकी माली क़ुरबानियां क़बूल फ़रमाए। इनके मालों एंव जानों में अत्यधिक बरकत अता फ़रमाए और जमाअत के निज़ाम को भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि इन मालों को उचित रंग में ख़र्च करने वाले हों।

नमाज़ों के पश्चात मैं एक जनाज़ा गायब भी पढ़ाउंगा जो हमारे स्थानीय मुअल्लिम तथा मुबल्लिग़ मुकर्रम अलहाज यूसुफ़ एडवस्टो साहब घाना का है जो 2 नवम्बर की रात पौने बारह बजे कमासी में अल्लाह के आदेशानुसार वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। 15 दिसम्बर 1942 में एक ईसाई घराने में पैदा हुए। सोलह वर्ष की आयु में अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ पाई। 20 वर्ष की आयु में उन्होंने जामिअःतुल मुबशिशरीन घाना से शिक्षा प्राप्त की। हुज़ूर अनवर ने उनके सुन्दर आचरण तथा सेवा का संक्षिप्त विवरण बयान फ़रमाया और दुआ की कि अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलन्द फ़रमाए तथा उनकी संतान को भी श्रद्धा एंव आज्ञापालन में बढ़ाता चला जाए।

KhulasaKhutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar AyyadahullhuTa'la 07.11.2014

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *OfficeAnsarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*